प्रवेशांक

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

Online ISSN-3048-9296
Vol.-1; issue-1 (Jan-Jun) 2024
Page No- 40-44

©2024 Shodhaamrit (Online)
www.shodhamrit.gyanvividha.com

डॉ.भावप्रकाश गांधी
सहायक प्राध्यापक,
राजकीय विनयन महाविद्यालय,
सेक्टर-15, गांधीनगर, गुजरात

सामाजिक समरसता के उन्नयन में महर्षि दयानन्द की चिन्तनदृष्टि

सामाजिक समरसता का मूल उद्देश्य समाज समाज के बीच आत्मीयता, सद्भावना और परस्पर प्रेमपूर्व व्यवहार का निर्माण करना है। मनुष्य को उच्च या हीनभावना से देखने की अपेक्षा मनुष्य के रुप में देखना और स्वीकार करना है। **'पुमान् पुमांसं परिपातु विश्वतः'**[1] यह वेद का वचन सामाजिक समरसता का मूल सूत्र है। दूसरे शब्दों में प्रत्येक व्यक्ति के अस्तित्व का स्वीकार करना ही सामाजिक समरसता है। किसी के साथ जात-पात, धर्म, क्षेत्र, संप्रदाय या भाषा के आधार पर भेदभाव करना नहीं है बल्कि उनके साथ मिलजुल कर चलना समरसता है। वैमनस्य, आक्रोश एवं नफरत आदि दुर्गुण सामाजिक समरसता में बाधक सिद्ध होते हैं। विशेषत: विद्वज्जन एवं सन्त के सान्निध्य में तथा हमारे प्राचीन साहित्य में सामाजिक सद्भावना को विशेष महत्त्व प्राप्त हुआ है। समाज को जोड़ने का काम साहित्य और सन्त बखूबी करते आए हैं। संत, कवि, लेखक और हमारे ग्रन्थ अपनी वाणी और लेखनी से मानवीय संवेदना को जागृत करते हैं। इस प्रकार व्यक्ति से व्यक्ति, व्यक्ति से समाज और समाज से समाज को जोड़ने का काम ही सामाजिक समरसता कहलाता है।

कुंजी शब्द – सामाजिक समरसता, महर्षि दयानन्द, वेद, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

संसार के समस्त साहित्य की गंगोत्री पावनी भगवती श्रुति अनादि काल से ही अपनी अविरल निर्मल ज्ञान की धारा से मानव के कलुषित अन्तःस्थल को पुनीत करती आ रही है। हमारी विश्ववारा वैदिक संस्कृति सर्वे भन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु.....यह भारतीयमनीषा का शान्तिगीत, 'द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं'[2] यह वैदिक शान्तिमन्त्र 'श्रृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः'[3] यह सर्वजनसमानता का सन्देश, 'यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति'[4] यह सर्वभूतों में आत्मदर्शन का निर्देश और 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'[5] यह मातृभूमि के प्रति स्नेहसन्देश, 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्'[6] यह एकपरिवारवाद और विश्वबन्धुत्व का वैदिक

Corresponding Author :
डॉ.भावप्रकाश गांधी
सहायक प्राध्यापक,
राजकीय विनयन महाविद्यालय,
सेक्टर-15, गांधीनगर, गुजरात

उद्घोष निःसन्दिग्ध सामाजिकसमरसता की आदर्श व्यवस्था प्रस्तुत करती है।

कालान्तर में परिवर्तनशील जगत् में कुछ विकृतियां प्रविष्ट हो गईं जहां पराधीनता की अवस्था में प्राय: समाज के सभी क्षेत्रों में हमें पतन की पराकाष्ठा परिलक्षित हुई है। जिनमें विशेषत: शिक्षा, धार्मिक आस्था और सामाजिक समरसता के स्वरूप में सर्वाधिक क्षति दृष्टिगोचर होती है। हमारे देश में हिंदू और मुस्लिम, स्त्री और पुरुष, दलित और सवर्ण, शिक्षित और अशिक्षित के बीच भेदभाव इसी महाभारत के युद्ध के पश्चात् अन्धकारकालखण्ड मध्ययुग से शुरु हुआ और इसका सर्वाधिक प्रभाव जब भारतवर्ष पराधीनता की जंजीरों में जकडा हुआ था तब दृष्टिगोचर हुआ। ऐसे करालकाल में महापुरुषों ने, कविओं ने, लेखकों ने और चिंतकों ने यह भेद मिटाने के लिए समय-समय पर प्रयास किए हैं। पराधीनकाल में सामाजिक विघटन और अध:पतन की विकट परिस्थिति में आज से 200 वर्ष पूर्व एक महामानव ने इस धरती पर जन्म लिया, जिसको सामान्य लोगों ने मूल शंकर और शुद्ध चैतन्य के नाम से जाना या यही महामानव कालान्तर में युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द के नाम से विख्यात हुए।

धरा जब जब विकल होती मुसीबत का समय आता।
किसी भी रूप में कोई महामानव चला आता ॥

सामाजिक समरसता के उन्नयन में अग्रेसर समाजसुधारक के रूप में, ईश्वरीय ज्ञान को जन-जन पहुंचाने वाले वेदोद्धारक के रूप में, गुरुकुलीय, कन्या शिक्षा एवं सर्वजनसुलभ समान शिक्षा के सूत्रधार के रूप में और कर्मणा वर्णव्यवस्था के प्रबल समर्थक के रूप में, कुरीतियों के पर्वत का विध्वंस करने वाले प्रखर पुरुष के रूप में महर्षि दयानन्दजी का अप्रतिम योगदान रहा है।[7]

सच्चे शिव की शोध में निकले सत्यव्रती महर्षि दयानन्द ने एक ईश्वर और एक वेद ज्ञान को सर्वोपरि मानते हुए भेदभावरहित, ऊंच-नीचभावनाविहीन वैभवशाली विश्वगुरु आर्यावर्त के पुनर्निर्माण हेतु अपना जीवन को आहूत कर दिया। वे इस भारतभूमि को ज्ञानकुंज और प्रकाशपुंज मानते हुए मनुस्मृति के इस वचन को स्वाभिमान पूर्वक कहते थे –

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा: ॥[8]

विश्व के लोगों को उन्होंने विदेशी आक्रांता, अंग्रेजी सत्ता, कुरीतियों और अंध विश्वासों के बोझ तले, अंधियारे काल में सोए हुए भारत को सर्वप्रथम स्वराज्य एवं स्वदेशी शब्द की संकल्पना प्रस्तुत करते हुए हुंकार भरी कि "कोई कितना ही करे किन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह ही सर्वोपरि व सर्वोत्तम होता है। महर्षि ने "वेदों की ओर लौटो" का मन्त्र देते हुए आत्मनिर्भर भारत बनाने का स्वप्न देखा। रेवाडी में प्रथम गौशाला, फिरोजपुर में पहला आर्य अनाथालय, पहला महिला गुरुकुल और महिला छात्रावास, पहला स्वदेशी बैंक, पहली पुनर्वास कालोनी, आयुर्वेदिक फार्मेसी,डी ए वी कालेज खोलकर और गुरुकुल परम्परा के द्वारा भारत को नई पहचान दी। महर्षि दयानन्दजी ने अन्धविश्वासपूर्ण सैंकड़ों प्रथाएं तोडी, समुद्र पार जाने का मिथक तोडा, विधवाओं को सम्मान दिलाया, महिलाओं को वोट का अधिकार दिया, पहली महिला विमान पायलट दी तथा भगतसिंह, बिस्मिल, लाजपत राय जैसे न जाने कितने बलिदानी दिए तो श्रद्धानंद, श्यामजी कृष्ण वर्मा जैसे हजारों क्रन्तिकारी दिए. मुंशी प्रेमचंद और गुरुदत्त जैसे क्रन्तिकारी लेखक दिए. सेमुअल स्टोक्स को महात्मा सत्यानन्द स्टोक्स बनाया, तलपडे जैसी वैज्ञानिक सोच के लोग दिए। इस प्रकार युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के कार्यों को गिनाना असम्भव है। जिस प्रकार वेदान्त विचारधारा में गीता, ब्रह्मसूत्र और उपनिषद् को प्रस्थानत्रयी माना जाता है उसी प्रकार वैदिक विचारधारा में आर्यसमाज में सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका और संस्कारविधि को प्रस्थानत्रयी स्वीकृत किया गया है। महर्षि दयानन्दजी ने इन ग्रन्थों में सामाजिक समरसता लाने हेतु अनेक सन्दर्भ प्रस्तुत किए हैं।

महर्षि दयानन्द जी की दृष्टि में वस्तुतः सामाजिक समरसता से तात्पर्य समाज के अभावग्रस्त समाज के लोगों को रोटी, कपडा और मकान या आजीविका प्रदान करने तक सीमित नहीं था, अशिक्षित अज्ञानपीडित समाज के लोगों के लिए नि:शुल्क शिक्षा देने मात्र से सामाजिक समरसता की पूर्ति सम्भव नहीं थी अथवा अपमान और बहिष्कार आदि अन्यायपूर्ण भेदभाव से मुक्त करने हेतु आरक्षण का लाभ देना, उनको पुरस्कृत करना, वर्ष में एक दो बार उनके घर पे जा कर अन्नादिग्रहण करते हुए, कुछ विशेष योजनाओं का लाभ प्रदान करना, कोई सामाजिक प्रयोग करने तक मर्यादित नहीं थे। महर्षि दयानन्द ने इस

प्रकार अल्पकालिक कुछ सान्त्वनाप्रद उपायों से सामाजिक समरसता स्थापित करने का विधान नहीं किया किन्तु उन्होंने सभी समाज के लोगों में वो भले धनवान्, विद्यावान् या कुलीन अथवा अभावग्रस्त, अस्पृश्य, अपमानित मनुष्य हो सभी के विचारों में, सभी के कार्यों में, सभी की वाणी में, सभी के जीवन में इस प्रकार के परिवर्तन लाने के पक्षधर थे जिससे सामाजिक असमानता सदा के लिए नष्ट हो जाए और सही अर्थों में सामाजिक समरसता का उद्देश्य सिद्ध हो जाए।

उन्होंने अपने त्याग, तप और ज्ञान के बल से मनुष्य जाति के परस्पर के कलह आदि के कारण को समझकर पुन: उस आदि वैदिक ज्ञान का उद्घोष किया। विश्वज्ञान को प्रसारित करने एवं आदि भाषा संस्कृत आदि स्रोत वेद के शब्दों में ही उसने कहा- **श्रृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः**।[9] सुनो भाइयों। आप सभी एक परमपिता की सन्तान हैं, इसलिए अहङ्कारजन्य अपने क्षुद्र स्वार्थों को छोड़कर पूर्ववत् मिलकर चलो।

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।।[10]

इस महामानव ने स्पष्ट रुप से यह उद्घोषणा की कि अज्ञान एवं स्वार्थ के कारण आपने जो छोटे-छोटे सम्प्रदाय, मजहब, देश, वेश एवं भाषा के रुप में अपने-अपने घरोदें बना रक्खे हैं, इनको आप स्वतः ही ध्वस्त कर एक महापरिवार के रुप में पुनः एकत्रित हो जाइए, मिल जाइए।

समानता का समर्थन स्वामी दयानन्द ने व्यक्ति की स्वतन्त्रता के साथ ही उसकी समानता का भी समर्थन किया है। इस सम्बन्ध में एक प्रमुख तथ्य यह है कि दयानन्द ने जन्म आधारित जाति-व्यवस्था का तीव्र खण्डन किया है जो व्यक्तियों के बीच एवं अमानवीय असमानताएँ उत्पन्न करने वाली है। उन्होंने गुण-कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था का समर्थन किया है, जो अन्य व्यक्तियों पर कुछ व्यक्तियों के विशेषाधिकारों की व्यवस्था नहीं है। यह शुद्ध रुप वर्णों के पुरुषों के समान ही स्त्रियों व शूद्रों को वेदाध्ययन के अधिकार का खुला समर्थन किया।[11] उनका मत है कि श्रेष्ठ जीवन के लिए आवश्यक सभी अधिकार महिलाओं व पुरुषों को समान रुप से प्राप्त होने चाहिए, अर्थात इस विषय में लिंग, जन्म, जाति, धर्म या सम्पत्ति के आधार पर स्त्री व पुरुषों में भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने अन्तर्जातीय भोज एवं अन्तर्जातीय विवाह का समर्थन किया। इसके अलावा दयानन्द ने अपने द्वारा स्थापित आर्यसमाज नामक संस्था में भी सभी सदस्यों को सभी भाँति समान स्तर का स्वीकृत किया है। व्यक्ति की स्वतन्त्रता एवं समानता तथा उनके उद्देश्य के बारे में दयानन्द के आदर्श को आर्यसमाज के अन्तिम तीन नियमों में स्पष्टतया देख सकते हैं– आठवां नियम-सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए। नौवां नियम- प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए और दसवां नियम – सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतन्त्र रहें। ये तीनों नियम सामाजिक समरसता के सन्दर्भ में महर्षि दयानन्द के दृष्टिकोण को दर्शाते हैं।[12]

सामाजिक समानता के समर्थक स्वामी दयानंद सरस्वती एक महान समाज सुधारक थे। उनमें भरपूर जोश था, प्रखर बुद्धि थी और जब वह सामाजिक अन्याय देखते तो उनके हृदय में आग जल उठती थी। वे बार-बार कहते थे- "अगर आप आस्तिक हैं तो सभी आस्तिक भगवान के एक परिवार के सदस्य हैं। अगर आपका परमात्मा में विश्वास है तो प्रत्येक मनुष्य उसी परमात्मा की एक चिंगारी है। इसलिए आप प्रत्येक मानव-प्राणी को अवसर दीजिए कि वह अपने को पूर्ण बना सके।"[13]

उन्होंने बाल-विवाह, दहेज प्रथा जैसी प्रथाओं का विरोध किया है। उन्होंने सर्वप्रथम बाल-विवाह के विरोध में विवाह के लिए लड़कों की आयु 25 वर्ष और लड़कियों की आयु 16 वर्ष निश्चित की। दहेज प्रथा को समाज का अभिशाप बताते हुए उसके उन्मूलन हेतु प्रयास किया।

विधवाओं के पुनर्विवाह हेतु उन्होंने सार्थक व सक्रिय प्रयास किये। आर्यसमाज के माध्यम से कन्या स्कूल खोलने तथा स्त्री शिक्षा के प्रचार का कार्य किया। बाल-विवाह, दहेज प्रथा आदि के विरुद्ध आन्दोलन चलाया। उनके विचारों का भारतीय जन मानस पर गहरा असर हुआ। महर्षि दयानंद की शिक्षाएं आज भी प्रासंगिक हैं। उन्हीं की शिक्षाओं पर चलते हुए आर्य समाज संस्थाएं देश एवं समाज सेवा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

मूलरूप से हम यदि उनके सामाजिक कार्यों को या सामाजिक चिन्तन का विमर्श करते हैं तो पता

चलता है कि उन्होंने सामाजिक समरसता के मुख्य सप्तसूत्र प्रदान किए जो व्यक्ति-जाति-वर्ण-देश आदि रूप से सर्वथा समानता का भाव जागृत कर सकते हैं। एतद्विषयक उनके विचार आज भी प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। हम महर्षि की सप्तसूत्री समरसतापूर्ण चिन्तनदृष्टि निम्नप्रकार से जान सकते हैं -

1. जातिवाद तोड़कर सभी श्रेष्ठ मनुष्यों के लिए गुणवाचक "आर्य" नाम दिया। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'[14] उनका उद्घोष देश के ही नहीं विश्व के प्रत्येक व्यक्ति जो श्रेष्ठ बनाने का निर्देश देता है। उन्होंने समाज को नया चिंतन, नई सोच दी, सत्यार्थ प्रकाश दिया और अमूल्य उपहार आर्य समाज दिया। जो सामाजिक समरसता का पूरजोर समर्थन करता है।
2. गुरुकुलीय शिक्षा का प्रावधान समाज के प्रत्येक बालक के लिए किया। जो स्वयं को श्रेष्ठ बनाना चाहता है और समुचितरूप से विद्या प्राप्त करना चाहता है वह किसी भी वर्ण का हो गुरुकुल में प्रवेश के लिए अर्ह माना जाता है। वहां समान वेष, समान निवास, समान आहार और समान शिक्षा का प्रावधान सामाजिक समरसता को ही दर्शाता है। गुरुकुल में पढने वाला राजपुत्र हो या दरिद्रपुत्र, निर्धन हो या धनवान्, कुलीन हो या सामान्यकुलोत्पन्न सबका बिना सरनेम के आर्य लिखना समानभाव का ही परिचय है।[15]
3. वेद किसी वर्ण विशेष के लिए नहीं है, वेदाध्ययन पर समग्र मानव समाज का अधिकार घोषित किया। वे आर्यसमाज के तीसरे नियम में कहते हैं – वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढना पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के 47 वें प्रकरण में वेदादिशास्त्रों के प्रमाणों को लेकर अधिकारानधिकार विषय पर विचार अभिव्यक्त किए।[16]
4. उन्होंने यज्ञपरम्परा को दैनिक क्रिया का अनिवार्य अंग मानते हुए समाज के आधारभूत गृहस्थाश्रम के लिए पंचमहायज्ञ करने का निर्देश दिया। संस्कारविधि के द्वारा सभी लोगों के लिए षोडश संस्कारों का वेदोक्त विधिविधान बताया। इन सभी यज्ञादि शुभ कार्यों को करने हेतु समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार दिया।[17]
5. वेदप्रतिपादित कर्मणा वर्णव्यवस्था को उन्होंने प्राय: अपने सभी ग्रन्थों में विशिष्ट स्थान प्रदान किया। उन्होंने जाति प्रथा का घोर विरोध किया। सारा हिन्दू समाज इसी प्रथा के कारण छिन्न-भिन्न हो रहा है। वे न तो मंदिरों में प्रवेश पा सकते है और न वेदों का अध्ययन कर सकते है। समाज को जातिप्रथा एवं अस्पृश्यता से मुक्त करने के लिए समाज को उन्नत व सशक्त बनाने की आवश्यकता है। उन्होंने वर्णाश्रम व्यवस्था को जन्मना नहीं मानते थे और कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था के पुरजोर समर्थक थे। वे कहते थे जो ज्ञान की पूर्ति करे वह ब्राह्मण है। जो सभी की सुरक्षा करता है वह क्षत्रिय है, जो निजी सामान व आपूर्ति की व्यवस्था करे वह वैश्य है। जो सेवा,साफ़ सफ़ाई का ध्यान रखे वह शूद्र है। इस प्रकार उन्होंने सभी वर्गों को कर्म के आधार पर सम्मान दिया।[18]
6. महर्षि दयानंद ने भारतीय समाज में फैली कुरीतियों, जातिवाद, छुआछुत, लैंगिक विषमता का जमकर विरोध किया। उन्होंने जन मानस को बताया कि यह कुरीतियां भारतीय वैदिक सांस्कृतिक के विकार के तौर पर उभरी और इन कुरीतियों को जड़ से मिटा देना चाहिए। साथ में अस्पृश्यता-निवारण, विधवा विवाह का समर्थन और अंधविश्वासनिर्मूलन जैसे कार्यों के द्वारा सत्यविद्या का प्रचार कर समाज के हर वर्ग को समान अवसर प्रदान कर समान, समरस स्वस्थ समाज का निर्माण कर भारत को पुनर्वैभव तक पहुंचाने हेतु अनेक उपाय सुझाये।[19]
7. उस समय विशेषत: स्त्री और शूद्रों को शिक्षा, धार्मिक कार्य आदि कोई भी अधिकार प्राप्त नहीं थे। वे स्त्रियों की आजादी के पक्ष में थे तथा वंचित वर्ग की महिलाओं के उत्थान के पक्ष में थे। दयानन्द ने नारी शिक्षा तथा उनके अधिकारों का समर्थन किया। उन्होंने पर्दा प्रथा तथा नारी शिक्षा की उपेक्षा का घोर विरोध किया। एतदर्थ स्वामीजी ने कन्याओं के समुचित सर्वांगी शिक्षण हेतु आर्यसमाज के माध्यम से कन्या विद्यालय, गुरुकुल खोलने तथा स्त्री शिक्षा के प्रचार का कार्य किया। पुनश्च पुनर्वास कोलोनी आदि के माध्यम से समाज से वंचित लोगों को श्रेष्ठ जीवन जीने का अधिकार दिया। विधवाओं के पुनर्विवाह हेतु उन्होंने सार्थक व सक्रिय प्रयास किये। मुसलमानों

द्वारा बलपूर्वक धर्म परिवर्तन को शुद्धिकरण के माध्यम से पुनर्गठित किया। हिन्दू धर्म में वापसी के लिए धर्म शुद्ध आन्दोलन बनाया। स्वामीजी ने ऐसे सहस्त्र लोगों को ईसाई धर्म से हिन्दू धर्म में प्रविष्ट कराया बाल-विवाह, दहेज प्रथा आदि के विरुद्ध आन्दोलन चलाया।[20]

ऋषि दयानन्द के ये विचार कुशल चिकित्सक की औषधि की भाँति थे, जो रोगी को पूर्ण रूप से रोगमुक्त करने में समर्थ होते हैं। ऋषि दयानन्द ने भेद-भावरहित होकर सबके आरोग्य के लिये इस प्रकार की जीवनदायिंनी औषधि का वितरण किया। इस ईश्वरीयज्ञान 'वेद' रूपी औषधि के पहचान एवं वितरण के लिये उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि आदि विभिन्न ग्रन्थों की रचना की, जिससे उनकी अनुपस्थिति में भी कोई रोगी शुद्ध औषधि के अभाव में कष्ट न प्राप्त कर सके। इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने मात्र वेदों के प्रमाणों को ध्यान में रखते हुए सामाजिक विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए हैं वे आज भी प्रासंगिक प्रतीत होते हैं।

हे महर्षि, हे दयानन्द हम सब आपकी 200 वीं जयंती पर नतमस्तक हैं। हे दयानन्द आपको और आपकी वेदोपबृंहित सत्य सनातन सर्वजनहितकारी, सार्वकालिक, सार्वभौमिक चिन्तनदृष्टि को वंदन-वंदन-वंदन।

सन्दर्भ सूची :-

1. ऋग्वेद – 6.5.14
2. यजुर्वेद – 36.12
3. ऋग्वेद – 10.13.3 , श्वेताश्वतरोपनिषद् – म.2.5
4. ईशोपनिषद् – म.6
5. अथर्ववेद- 12.1.12
6. यजु. 32.8
7. हमें आजादी किसने दिलाई – श्री विवेक आर्य पृ.8
8. मनुस्मृति – 2.21
9. यजु. 11/5
10. ऋग्. 10/191/2
11. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका – वर्णाश्रमविषय:
12. द्रष्टव्य – आर्यसमाज के 10 नियम
13. ऋग्वेदादोभाष्यभूमिका - अधिकारानधिकारविषय:
14. ऋग्वेद – 9.63.5
15. सत्यार्थप्रकाश, तृतीय समुल्लास
16. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका - अधिकारानधिकारविषय:
17. पंचमहायज्ञविधि: - महर्षि दयानन्द , पृष्ठ सं.5, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका - पंचमहायज्ञविषय:
18. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका - वर्णाश्रमविषय:
19. उपदेशमंजरी – उपदेश -3 एवं 4
20. व्यवहारभानु: - पृ.सं.25

•